www.xtrapapers.com

Cambridge Assessment International Education

Cambridge IGCSE™

CANDIDATE NAME

CENTRE NUMBER

CANDIDATE NUMBER

6526627569

HINDI AS A SECOND LANGUAGE **0549/01**

Paper 1 Reading and Writing **October/November 2021**

2 hours

You must answer on the question paper.

No additional materials are needed.

INSTRUCTIONS
- Answer **all** questions.
- Use a black or dark blue pen.
- Write your name, centre number and candidate number in the boxes at the top of the page.
- Write your answer to each question in the space provided.
- Do **not** use an erasable pen or correction fluid.
- Do **not** write on any bar codes.
- Dictionaries are **not** allowed.

INFORMATION
- The total mark for this paper is 60.
- The number of marks for each question or part question is shown in brackets [ ].

This document has **16** pages. Any blank pages are indicated.

© UCLES 2021

www.xtrapapers.com

अभ्यास 1: प्रश्न 1–6

'लोक-कथा का महत्व' आलेख को ध्यानपूर्वक पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

लोक-कथा की विधा बहुत पुरानी और लोकप्रिय है। लोक-कथाओं के नाना रूप हैं। सोते समय बच्चों की ज़िद पर उनके मनोरंजन के लिए सुनाई जाने वाली लोक-कथाएँ एक प्रकार की हैं तो तीज-त्यौहार पर सुनी-सुनाई जाने वाली दूसरे प्रकार की। कुछ लोक-कथाएँ 'एक था राजा और एक थी रानी' की शैली में शुरू होती हैं तो कुछ जंगल में 'एक शेर' या 'एक भालू' था से। राजा-रानी की कहानियाँ भी जनसाधारण के दु:ख-सुख के इर्द-गिर्द ही चलती हैं, उनमें भी विपदा के बादल गहराते हैं और विपदा चाहे जितनी लम्बी हो उसका अंत होता है। सुख के पल आते हैं और कहानी का अंत, 'जैसे उनके दिन फिरे वैसे सबके फिरें', से होता है। विपत्ति में डूबते-उबरते मन को ऐसी लोक-कथाएँ मनोरंजन और आशा के साथ एक नैतिक संदेश प्रदान करती हैं।

ऐसी ही एक कहानी उस अकेली चिड़िया की है जिसका दाना चक्की के खूंटे में अटक गया और उसे पाने के लिए शांति और धैर्य के साथ उसने लंबी कोशिश की। उसके सामने जीवन-मरण का प्रश्न था। उसने किसी तरह से तो एक दाना जुटाया था, जब चक्की में उसे दलने गई तो दाना चक्की के खूंटे में अटका रह गया। अब क्या खाए, क्या पीए और क्या लेकर परदेस जाए! वह बढ़ई के पास गई, और बढ़ई से खूंटा चीरने को कहा ताकि दाना बाहर निकल जाए। बढ़ई ने मना कर दिया तो राजा के पास गई, 'राजा, राजा बढ़ई को दंड दो!' राजा ने उसकी बात अनसुनी कर दी तो रानी से राजा को छोड़ने की दरख्वास्त कर डाली। रानी ने मना किया तो साँप के पास पँहुची - 'रानी को डँसो', साँप ने मना किया तो लाठी से गुहार लगाई - 'साँप को मारो।' लाठी ने मना किया तो आग से कहा, 'लाठी को जला दो।' आग के मना करने पर सागर से मिन्नत की, 'आग को बुझा दो।' सागर ने मना किया तो हाथी से कहा, 'सागर को सूँड में भर कर पी जाओ।' हाथी ने मना किया तो चींटी से कहा, 'हाथी की सूँड में घुस कर उसे काट-काट कर बेदम कर दो।'

चींटी ने चिड़िया की गुज़ारिश सुन ली और हाथी को काटने दौड़ी तो हाथी गिड़गिड़ाया, 'हमकू काटो-वाटो मति कोई, हम सागर सोखब लेइ।' हाथी सागर को सोखने चला तो सागर गिड़गिड़ाया। इस तरह सागर आग को बुझाने पर, आग लाठी को जलाने पर, लाठी साँप को मारने पर, साँप रानी को डँसने पर, रानी राजा को छोड़ने पर, राजा बढ़ई को दंडित करने पर और अंत में बढ़ई खूंटा चीरने पर राजी हुआ। यह चिड़िया के सतत प्रयत्न की जीत थी।

www.xtrapapers.com

1 लोक-कथाओं के **दो** उद्देश्य क्या हैं?

- ....
- .... [2]

2 लोक-कथाओं का अंत कैसे होता है?

.... [1]

3 चिड़िया की क्या समस्या थी?

.... [1]

4 चिड़िया ने रानी से क्या माँगा?

.... [1]

5 चिड़िया की समस्या का हल करने की पहल कब हुई?

.... [1]

6 कहानी से कौन से **दो** संदेश मिलते हैं?

- ....
- .... [2]

[पूर्णांक 8]

© UCLES 2021

www.xtrapapers.com

अभ्यास 2: प्रश्न 7–15

'सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'' के बारे में छपे इस लेख को ध्यान से पढ़ें। प्रश्न 7 से 15 का उत्तर देने के लिए उनके नीचे दिए गए अनुच्छेदों (A से D) में से सही अनुच्छेद चुन कर उसके सामने के कोष्ठक में सही का निशान लगाएँ। अनुच्छेदों को एक से अधिक बार चुना जा सकता है।

A हिंदी के छायावादी युग के कवियों में सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' कई दृष्टियों से बहुत महत्वपूर्ण हैं। उनकी शिक्षा बंगला भाषा में हुई थी और प्रारंभ में वे बंगला में ही कविता लिखते थे। विवाह के बाद पत्नी की प्रेरणा से वे हिंदी में रचना करने लगे। उनका व्यक्तित्व अतिशय विद्रोही और क्रांतिकारी तत्वों से निर्मित हुआ था। जीवन की कठिन परिस्थितियों और पारिवारिक दु:खों के अनुभव से उनके व्यक्तित्व में विषाद और कभी हार न मानने के दृढ़ संकल्प का अद्भुत सम्मिश्रण था जो उनकी कविताओं में एक विशेष प्रभाव पैदा करता है। व्यक्तित्व की ये विशेषताएँ उनकी कविताओं में छंद, भाषा-शैली और भाव संबंधी नवीन प्रयोग के रूप में प्रस्तुत होने के साथ छायावाद युग की कविता को परिभाषित भी करती हैं।

B 'निराला' के स्वाभिमानी स्वभाव के कारण लोगों के मन में यह धारणा जमी हुई थी कि वे अपने आगे किसी को भी नहीं गिनते। बात किसी हद तक ठीक भी थी। अपने मन के भाव वे किसी के साथ बाँटने के बजाय उन्हें कविता के रूप में अभिव्यक्त करते थे। कविता लिखने के पहले वे मन ही मन सोचते रहते थे। अपने हृदय के उद्गारों में तल्लीन होकर उन्हें चुपचाप छंद, ताल, लय और शब्दों में बाँधने में लगे रहते थे। जब तक कविता पूरी तरह से आकार नहीं ले लेती, अपने निकटतम मित्र या संबंधियों से भी उसकी चर्चा तक नहीं करते थे। इसलिए दिन-रात उनके साथ रहने वालों को उनके मन में चलने वाली सृजन प्रक्रिया का अनुमान तक नहीं होता था। लोग उनकी ऊपरी बातों से इतने आकर्षित होते थे कि उनके भीतर छिपे कवि की छवि से नितांत अनभिज्ञ रहते थे। निराला के मित्र, डॉ रामविलास शर्मा ने उनके दोहरे व्यक्तित्व का विवरण देते हुए लिखा, 'एक दिन अट्ठावन नंबर, नारियल वाली गली, लखनऊ के मकान में कुछ घंटे नीचे के कमरे में बिताने के बाद, हाथ में एक कागज़ लिए वे ऊपर आए, तब मैं उन्हीं के साथ रहता था, दो छंद पढ़ कर सुनाए और बोले, 'तुलसीदास' पूरा कर दिया है। ये उनकी प्रसिद्ध कविता, 'तुलसीदास' के छंद थे। इसके पहले उन्होंने आभास तक नहीं दिया था कि उनका मन तुलसीदास के साथ चित्रकूट में घूम रहा है।'

C निराला की बहुत सी कविताएँ आसानी से समझ में नहीं आतीं। वास्तव में वे कविता लिखने में बहुत परिश्रम करते थे, हर पंक्ति और हर शब्द के संगीत और उनकी व्यंजना का ध्यान रखते थे। केवल कविता ही नहीं, कभी-कभी पत्र लिखते हुए भी वे भाषा के गठन का इसी तरह ध्यान रखते थे। उनके घर में प्राय: अधलिखे पोस्टकार्ड देखने को मिलते थे। उनका यही रहस्य था, थोड़ा सा लिखा, कोई शब्द पसंद नहीं आया, तो फिर से शुरू किया। अपनी बात कहने के लिए सही शब्द की तलाश और उसे उपलब्ध होने की खुशी संस्कृत के महाकवियों का स्मरण कराती है जो अपनी कविता में सार्थक शब्द लिखने की खुशी की तुलना पुत्र-जन्म के आनंद से करते थे।

D कविताएँ पढ़ने और सुनाने में उन्हें बड़ा आनंद आता था। सैंकड़ों कविताएँ, अपनी ही नहीं दूसरों की भी, उन्हें कंठस्थ थीं। सुनाते समय वे विह्वल हो जाते थे, गला भर आता था और उनका विशाल आकार हवा में पत्ते की तरह काँप उठता था। कविता सुनाते समय वे अपनी आँखों और स्वर से उसकी जितनी अच्छी व्याख्या कर देते थे, उतनी अच्छी व्याख्या कोई आलोचक भी नहीं कर सकता था। शेक्सपियर के एक सॉनेट को लेकर वे अंग्रेज़ी के कई अध्यापकों को परेशान कर चुके थे। इसी तरह कालिदास के 'मेघदूत' के कुछ छंदों को लेकर उन्होंने संस्कृत के कुछ आचार्यों की परीक्षा ले डाली थी। निराला का घर साहित्य प्रेमियों के लिए तीर्थस्थान था। प्रसिद्ध साहित्यकारों से लेकर विद्यार्थियों तक के लिए उनके द्वार सदा खुले रहते थे। हालाँकि कविता को लेकर निराला और प्रसिद्ध कवि सुमित्रानंदन पंत के बीच मतभेद थे, पर जब भी पंत लखनऊ आते थे, उनके यहाँ अवश्य आते थे। दोनों के सरस वार्तालाप को सुनकर यह अनुमान तक नहीं किया जा सकता था कि वे एक-दूसरे के आलोचक थे।

© UCLES 2021

www.xtrapapers.com

नीचे दिए गए वक्तव्यों (7–15) को पढ़िए तथा कोष्ठक में सही का निशान लगा कर बताइए कि कौन सा अनुच्छेद (A–D) किस वक्तव्य से सम्बंधित है।

उदाहरण: 'निराला' हिंदी के सुप्रसिद्ध कवि थे।

A ✓ B ☐ C ☐ D ☐

7 'निराला' के नज़दीक रहने वाले भी उनके मन में चलने वाली रचना-प्रक्रिया से अनभिज्ञ रहते थे।

A ☐ B ☐ C ☐ D ☐ [1]

8 साहित्यिक मतभेद को वे अपनी मित्रता के बीच नहीं आने देते थे।

A ☐ B ☐ C ☐ D ☐ [1]

9 निराला की कविताएँ कठिन हैं।

A ☐ B ☐ C ☐ D ☐ [1]

10 'निराला' की स्मरण शक्ति बहुत अच्छी थी।

A ☐ B ☐ C ☐ D ☐ [1]

11 'निराला' अपनी रचनाओं के सबसे बड़े आलोचक थे।

A ☐ B ☐ C ☐ D ☐ [1]

12 'निराला' का व्यक्तित्व जटिल था।

A ☐ B ☐ C ☐ D ☐ [1]

13 'निराला' की कविताओं से छायावादी कविता की विशेषता को समझा जा सकता है।

A ☐ B ☐ C ☐ D ☐ [1]

www.xtrapapers.com

14 हिंदी के साथ संस्कृत और अंग्रेज़ी साहित्य की भी उन्हें गहरी समझ थी।

A ☐ **B** ☐ **C** ☐ **D** ☐ [1]

15 जीवन के कठिन संघर्ष ने उनके भीतर साहित्य में नवीन प्रयोग करने का साहस भरा था।

A ☐ **B** ☐ **C** ☐ **D** ☐ [1]

[पूर्णांक 9]

© UCLES 2021

www.xtrapapers.com

BLANK PAGE

www.xtrapapers.com

अभ्यास 3: प्रश्न 16–19

'उड़ानहीन पक्षी - पैंग्विन' के बारे में निम्नलिखित आलेख को ध्यानपूर्वक पढ़िए।

सालभर बर्फ से आच्छादित पृथ्वी के दक्षिणी ध्रुव में बहुत कम प्राणी जीवित रह पाते हैं, किंतु दो पैरों पर डगमगाकर चलने वाले पैंग्विन के लिए यह अनुकूल आवास है। पैंग्विन उड़नशील पूर्वजों के वंशज हैं। सभी पक्षियों के पंख होते हैं, जिनका उपयोग वे उड़ने के लिए करते हैं। पर पैंग्विन अपने पंखों से उड़ने की क्षमता खोकर उनका प्रयोग बदल कर तैराक बन गए। उनकी हड्डियाँ भारी हो गईं जिससे उन्हें पानी में डुबकी लगाने में सहायता मिली और चप्पू जैसे हाथ उन्हें तैराकी में माहिर बनाते हैं। वे 25 मील प्रति घंटे की रफ़्तार से 1650 फुट से भी अधिक गहरे पानी में तैरते हैं। धरती पर वे अपने डगमगाते कदमों से चलते हैं, पर उनका 80 प्रतिशत समय पानी में व्यतीत होता है।

पैंग्विन की 17-20 प्रजातियाँ हैं जिनमें से 47 इंच लंबा और सबसे बड़ा, ऐम्परर पैंग्विन दक्षिणी ध्रुव में रहता है। यह केवल एक मिथक है कि सभी पैंग्विन ठंडे प्रदेशों में ही रहते हैं। गहरे नीले रंग की पीठ और सफ़ेद वक्ष वाला, 13 इंच लंबा, सबसे छोटा कोरोरा पैंग्विन न्यूज़ीलैंड के तटीय प्रदेशों, तस्मानिया, दक्षिण ऑस्ट्रेलिया, और दक्षिण अफ्रीका में पाया जाता है। गैलापगोस पैंग्विन की एकमात्र ऐसी प्रजाति है जो भूमध्य रेखा के उत्तर में विचरण करती है। पैंग्विन एक सामाजिक प्राणी है जो एक बस्ती या कॉलोनी बना कर समूह में रहता है। पैंग्विन का मुख्य भोजन मछली और झींगा हैं जिनका शिकार वह पानी में गोता लगाकर करता है। वह पानी के भीतर 20 मिनट तक रह सकता है और समुद्र का ख़ारा पानी पीता है। मुँह के भीतर दाँत न होने के कारण शिकार पकड़ने और खाने के लिए अपनी चोंच का इस्तेमाल करता है।

लगभग पाँच साल की उम्र में मादा पैंग्विन प्रजनन के लिए तैयार हो जाती है। अधिकतर प्रजातियाँ वसंत और ग्रीष्म ऋतु में प्रजनन करती हैं। आमतौर पर नर पैंग्विन अपनी जोड़ी चुनने के बाद घोंसले के लिए एक अच्छी जगह खोज लेता है। ऐम्परर पैंग्विन के बारे में यह कहा जाता है कि जब वह एक बार अपने लिए मादा पैंग्विन चुन लेता है तो आजीवन उसी के साथ रहता है। कदाचित इसी कारण से स्थायी प्रेम को 'पैंग्विन लव' कहते हैं! मादा ऐम्परर पैंग्विन केवल एक अंडा देती है, उसके अलावा अन्य सभी प्रजातियाँ एक समय में दो अंडे देती हैं। मादा ऐम्परर पैंग्विन बालू के टीले या चट्टानों के बीच अंडा देकर कई सप्ताह के लिए भोजन की तलाश में निकल जाती है और नर बिना खाए-पीए घोंसले में अंडे को अपने पैरों के बीच रख कर सेता है। अंडे को 40 दिनों तक सेने के बाद चूज़े बाहर निकलने के लिए तैयार होते हैं। वे अपनी चोंच की मदद से अंडा तोड़कर बाहर आते हैं। मादा पैंग्विन तब वापिस लौट कर उनकी देखभाल शुरू करती है। नर और मादा दोनों मिलकर चूज़े को अपनी चोंच से खाना खिलाते हैं।

जन्म के समय पैंग्विन के चूज़े का वज़न लगभग 35 ग्राम और शरीर पर कोमल रोएँ होते हैं। आठ सप्ताह के भीतर उनका वज़न तीन गुणा हो जाता है। जब तक चूज़ों के शरीर पर जल-अवरोधक पंख विकसित नहीं होते, नर और मादा उनकी देखभाल करते हैं। पंख आ जाने पर वे आत्मनिर्भर होकर पानी की दिशा में चले जाते हैं। वे गले के स्वर से परस्पर संवाद करते हैं। चूज़ों की आवाज़ से मादा उन्हें पहचान लेती है।

पैंग्विन के विषय में कहा जाता है कि धरती पर उनका कोई शत्रु नहीं होने के कारण उनके अस्तित्व को कोई ख़तरा नहीं। लेकिन जलवायु-परिवर्तन के कारण अब उन पर संकट के बादल मंडरा रहे हैं। पिछले पाँच दशकों से वैज्ञानिकों का एक दल हवाई और उपग्रह तस्वीरों से पैंग्विन की घटती हुई संख्या का अध्ययन कर रहा है। जलवायु-परिवर्तन के दुष्प्रभाव से दक्षिणी ध्रुव की बर्फ पिघलने से ऐसे हजारों चूज़ों की एक पूरी बस्ती, जो जल-अवरोधक पंख न होने के कारण पानी में तैरने में असमर्थ थी, डूब कर नष्ट हो गई। 1980 में विश्व की सबसे अधिक संख्या वाले ऐम्परर पैंग्विन की संख्या बहुत तेज़ी से घटी है और अभी भी घटती जा रही है। यदि जलवायु परिवर्तन की रोकथाम नहीं की गई और तापमान इसी तरह से बढ़ता गया तो इस शताब्दी के अंत तक दक्षिणी ध्रुव में पैंग्विन की 70 प्रतिशत आबादी समाप्त हो जाने की आशंका है। इसलिए जीव वैज्ञानिक इस उड़ानहीन पक्षी की गणना संकटापन्न प्रजाति के अंतर्गत करवाने की चेष्टा में हैं।

www.xtrapapers.com

अभ्यास 3: प्रश्न 16–19

'उड़ानहीन पक्षी - पैंग्विन' आलेख के आधार पर नीचे दिए गए प्रत्येक शीर्षक (16-19) के अंतर्गत संक्षिप्त नोट लिखें।

16 पैंग्विन की विशेषताएँ

- ....
- .... [2]

17 प्रजातियाँ और आवास

- ....
- .... [2]

18 भोजन और प्रजनन

- ....
- .... [2]

19 अस्तित्व पर ख़तरा और संरक्षण के उपाय

- ....
- ....
- .... [3]

[पूर्णांक 9]

अभ्यास 4 में आप आलेख और अपने नोट्स के आधार पर 'उड़ानहीन पक्षी - पैंग्विन' शीर्षक लेख का सारांश लिखेंगे।

www.xtrapapers.com

अभ्यास 4: प्रश्न 20

अभ्यास 3 के आलेख 'उड़ानहीन पक्षी - पैंग्विन' में पैंग्विन के जीवन-चक्र, अनिश्चित भविष्य और संरक्षण के उपाय का वर्णन है।

अभ्यास 3 के आलेख और अपने बनाए नोट्स के आधार पर उसका सारांश लिखें। आपका सारांश **100 शब्दों** से अधिक नहीं होना चाहिए।

आप यथासंभव **अपने शब्दों** में लिखें।

आपको **अंतर्वस्तु के लिए** अधिकतम 4 अंक और **सटीक और संक्षिप्त भाषा-शैली के लिए** अधिकतम 6 अंक दिए जाएंगे।

www.xtrapapers.com

[10]

[पूर्णांक 10]

www.xtrapapers.com

अभ्यास 5: प्रश्न 21

आपने एक कहानी पढ़ी जो आपको बहुत पसंद आई। कहानी के लेखक को एक ई-मेल लिखें। आपके ई-मेल में निम्नलिखित बातें सम्मिलित होनी चाहिए:

- संक्षेप में कहानी की विषय वस्तु
- कहानी का सबसे रोचक पहलू
- आप उसमें क्या बदलना चाहेंगे?

आपका ई-मेल लगभग 120 शब्दों में होना चाहिए। आपको पता लिखने की आवश्यकता **नहीं** है।

आपको **3** अंक अंतर्वस्तु के लिए और **5** अंक **सटीक** भाषा और शैली के लिए दिए जाएंगे।

www.xtrapapers.com

[8]

[पूर्णांक 8]

www.xtrapapers.com

अभ्यास 6: प्रश्न 22

अभिभावकों को अपनी संतान पर उनका भविष्य चुनने के लिए अपनी अधूरी इच्छाएँ नहीं थोपनी चाहिए।

आप कहाँ तक इस मत से सहमत हैं? अपने विचारों को समझाते हुए स्कूल पत्रिका के लिए अपना लेख **लगभग 200** शब्दों में लिखिए। आपका लेख विषय की जानकारी पर केन्द्रित होना चाहिए।

अभिभावक संतान को अपने अनुभव का लाभ देना चाहते हैं।

संतान को अपने अनुभव से सीखने का अधिकार है।

ऊपर दी गई टिप्पणियाँ आपके लेखन के लिए दिशा प्रदान कर सकती हैं। इनके माध्यम से आप अपने विचारों को विस्तार दीजिए।

लिखित प्रस्तुति पर अंर्तवस्तु के लिए 8 अंक तक और सटीक भाषा के लिए भी 8 अंक तक दिए जाएंगे।

www.xtrapapers.com

[16]

[पूर्णांक 16]

© UCLES 2021

www.xtrapapers.com

BLANK PAGE

Permission to reproduce items where third-party owned material protected by copyright is included has been sought and cleared where possible. Every reasonable effort has been made by the publisher (UCLES) to trace copyright holders, but if any items requiring clearance have unwittingly been included, the publisher will be pleased to make amends at the earliest possible opportunity.

To avoid the issue of disclosure of answer-related information to candidates, all copyright acknowledgements are reproduced online in the Cambridge Assessment International Education Copyright Acknowledgements Booklet. This is produced for each series of examinations and is freely available to download at www.cambridgeinternational.org after the live examination series.

Cambridge Assessment International Education is part of the Cambridge Assessment Group. Cambridge Assessment is the brand name of the University of Cambridge Local Examinations Syndicate (UCLES), which itself is a department of the University of Cambridge.

© UCLES 2021